J.P.S.

NH-16, Gangapada, Khurda

2025-26

प्रकरण - पद-रैदास

विपिन कुमार यादव

{ टी. जी. टी.
हिंदी विभाग }

पाठ – पद - रैदास

कवि – रैदास

कवि–रैदास

रैदास नाम से विख्यात संत **रविदास** का जन्म **सन् 1388** और देहावसान **सन् 1518 में बनारस** में ही हुआ, ऐसा माना जाता है। इनकी ख्याति से प्रभावित होकर **सिकंदर लोदी** ने इन्हें **दिल्ली** आने का निमंत्रण भेजा था। मध्ययुगीन साधकों में रैदास का विशिष्ट स्थान है। **कबीर** की तरह रैदास भी **संत कोटि के कवियों** में गिने जाते हैं। मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा जैसे दिखावों में रैदास का ज़रा भी विश्वास न था। वह व्यक्ति की **आंतरिक भावनाओं और आपसी भाईचारे को ही सच्चा धर्म** मानते थे।

रैदास ने अपनी काव्य-रचनाओं में सरल, व्यावहारिक **ब्रजभाषा** का प्रयोग किया है, जिसमें **अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फ़ारसी** के शब्दों का भी मिश्रण है। रैदास को उपमा और रूपक अलंकार विशेष प्रिय रहे हैं। सीधे-सादे पदों में संत कवि ने हृदय के भाव बड़ी सफ़ाई से प्रकट किए हैं। इनका आत्मनिवेदन, दैन्य भाव और सहज भक्ति पाठक के हृदय को उद्वेलित करते हैं। रैदास के **चालीस पद** सिखों के पवित्र धर्मग्रंथ **'गुरुग्रंथ साहब'** में भी सम्मिलित हैं।

पाठ में प्रवेश

कवि - रैदास

यहाँ रैदास के दो पद लिए गए हैं। पहले पद 'प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी' में कवि अपने आराध्य को याद करते हुए उनसे अपनी तुलना करता है। उसका प्रभु बाहर कहीं किसी मंदिर या मस्जिद में नहीं विराजता वरन् उसके अपने अंतस में सदा विद्यमान रहता है। यही नहीं, वह हर हाल में, हर काल में उससे श्रेष्ठ और सर्वगुण संपन्न है। इसीलिए तो कवि को उन जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है।

दूसरे पद में भगवान की अपार उदारता, कृपा और उनके समदर्शी स्वभाव का वर्णन है। रैदास कहते हैं कि भगवान ने तथाकथित निम्न कुल के भक्तों को भी सहज-भाव से अपनाया है और उन्हें लोक में सम्माननीय स्थान दिया है।

काव्य खण्ड -1

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

शब्दार्थः

बास – गंध, वास
चितवत – देखना, निरखना
समानी – समाना (सुगंध का बस जाना), बसा हुआ (समाहित)
घन – बादल
मोरा – मोर, मयूर
चकोर – तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है
बाती – बत्ती, रुई, जिसे तेल में डालकर दिया जलाते हैं
जोति – ज्योति, देवता के प्रीत्यर्थ जलाया जाने वाला दीपक
बरै – बढ़ाना, जलना
राती – रात्रि
सुहागा – सोने को शुद्ध करने के लिए प्रयोग में आने वाला क्षारद्रव्य
दासा – दास, सेवक

व्याख्या: काव्य खण्ड -1

कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु! यदि तुम चंदन हो तो तुम्हारा भक्त पानी है। कवि कहता है कि जिस प्रकार चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है।

कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु!

यदि तुम बादल हो तो तुम्हारा भक्त किसी मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम चाँद हो तो तुम्हारा भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलकों को झपकाए चाँद को देखता रहता है।

व्याख्या: काव्य खण्ड -1

कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम दीपक हो तो तुम्हारा भक्त उसकी बत्ती की तरह है जो दिन रात रोशनी देती रहती है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु! यदि तुम मोती हो तो तुम्हारा भक्त उस धागे के समान है जिसमें मोतियाँ पिरोई जाती हैं। उसका असर ऐसा होता है जैसे सोने में सुहागा डाला गया हो अर्थात उसकी सुंदरता और भी निखर जाती है। कवि रैदास अपने आराध्य के प्रति अपनी भक्ति को दर्शाते हुए कहते हैं कि हे मेरे प्रभु! यदि तुम स्वामी हो तो मैं आपका भक्त आपका दास यानि नौकर हूँ।

बोधात्मक ज्ञान परख प्रश्न

क्रमांक	प्रश्न	विकल्प A	विकल्प B	विकल्प C	विकल्प D	सही उत्तर
1	कवि चंदन और पानी का उदाहरण किस भाव को प्रकट करने के लिए देता है?	ईर्ष्या	भक्त और भगवान के मधुर संबंध का	क्रोध	दुःख	B
2	जब भगवान को बादल कहा गया है, तो भक्त की तुलना किससे की गई है?	चकोर	मोती	मोर	दीपक	C
3	कवि के अनुसार चकोर पक्षी किसे निहारता है?	सूर्य	दीपक	चाँद	चंदन	C
4	दीपक और बत्ती का उदाहरण किस बात को दर्शाता है?	अंधकार	आलस्य	भक्त की सेवा भावना	प्रकाश की कमी	C
5	यदि भगवान मोती हैं, तो भक्त किससे तुलना की गई है?	धागा	सोना	मोर	चंदन	A
6	कवि रैदास भगवान से अपने संबंध को किस रूप में प्रस्तुत करते हैं?	राजा और प्रजा	शिक्षक और छात्र	स्वामी और दास	पिता और पुत्र	C

काव्य खण्ड -2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढ़रै।
नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै॥

शब्दार्थ:

लाल – स्वामी
कउनु – कौन
गरीब निवाजु – दीन-दुखियों पर दया करने वाला
गुसईआ – स्वामी, गुसाईं
माथै छत्रु धरै – मस्तक पर मुकुट धारण करने वाला
छोति – छुआछूत, अस्पृश्यता
जगत कउ लागै – संसार के लोगों को लगती है
ता पर तुहीं ढरै – उन पर द्रवित होता है
नीचहु ऊच करै – नीच को भी ऊँची पदवी प्रदान करता है
नामदेव – महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध संत, इन्होंने मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में रचना की है
तिलोचनु (त्रिलोचन) – एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य, जो ज्ञानदेव और नामदेव के गुरु थे
सधना – एक उच्च कोटि के संत जो नामदेव के समकालीन माने जाते हैं
सैनु – ये भी एक प्रसिद्ध संत हैं, आदि 'गुरुग्रंथ साहब' में संगृहीत पद के आधार पर इन्हें रामानंद का समकालीन माना जाता है
हरिजीउ – हरि जी से
सभै सरै – सब कुछ संभव हो जाता है

व्याख्या: काव्य खण्ड -2

इस पद में कवि भगवान की महिमा का बखान कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि हे! मेरे स्वामी तुझ बिन मेरा कौन है अर्थात कवि अपने आराध्य को ही अपना सबकुछ मानते हैं। कवि भगवान की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि भगवान गरीबों और दीन-दुःखियों पर दया करने वाले हैं, उनके माथे पर सजा हुआ मुकुट उनकी शोभा को बड़ा रहा है। कवि कहते हैं कि भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान् की इच्छा के बिना दुनिया में कोई भी कार्य संभव नहीं है।

व्याख्या: काव्य खण्ड -2

कवि कहते हैं कि भगवान के छूने से अछूत मनुष्यों का भी कल्याण हो जाता है क्योंकि भगवान अपने प्रताप से किसी नीच जाति के मनुष्य को भी ऊँचा बना सकते हैं अर्थात भगवान् मनुष्यों के द्वारा किए गए कर्मों को देखते हैं न कि किसी मनुष्य की जाति को। कवि उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों का उद्धार किया था वही बाकी लोगों का भी उद्धार करेंगे। कवि कहते हैं कि हे !सज्जन व्यक्तियों तुम सब सुनो, उस हरि के द्वारा इस संसार में सब कुछ संभव है।

बोधात्मक ज्ञान परख प्रश्न

प्रश्न 1	प्रश्न 2	प्रश्न 3
कवि के अनुसार उनका सच्चा स्वामी कौन है? A) उनका परिवार B) उनका मित्र C) भगवान D) उनका गुरु	कवि के अनुसार किसके माथे पर मुकुट सजा है? A) साधु B) राक्षस C) भगवान D) भक्त	कवि के अनुसार भगवान किस पर दया करते हैं? A) अमीरों पर B) दुखियों और गरीबों पर C) योद्धाओं पर D) राजाओं पर
✅ सही उत्तर: C) भगवान	✅ सही उत्तर: C) स्वयं भगवान	✅ सही उत्तर: B) दुखियों और गरीबों पर

बोधात्मक ज्ञान परख प्रश्न

प्रश्न 4	प्रश्न 5	प्रश्न 6
कवि के अनुसार भगवान किसके कर्मों को देखते हैं? A) जाति को B) कुल को C) कर्मों को D) भाषा को	नामदेव, कबीर, त्रिलोचन आदि का उद्धार किसने किया? A) राजा ने B) समाज ने C) भगवान ने D) गुरु ने	कवि अंत में किससे आग्रह करते हैं कि वे हरि की शक्ति को समझें? A) बच्चों से B) सज्जनों से C) राजाओं से D) सेवकों से
✅ सही उत्तर: C) कर्मों को	✅ सही उत्तर: C) भगवान ने	✅ सही उत्तर: B) सज्जनों से

एन सी ई आर टी. प्रश्न अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीज़ों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

(ख) पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे- पानी, समानी आदि। इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।

(ग) पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए-

(ङ) दूसरे पद की 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(च) 'रैदास' ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से पुकारा है?

(छ) निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए-

मोरा, चंद, बाती, जोति, बरै, राती, छत्रु, धरै, छोति, तुहीं, गुसईआ

2. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) जाकी अँग-अँग बास समानी
(ख) जैसे चितवत चंद चकोरा
(ग) जाकी जोति बरै दिन राती
(घ) ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै
(ङ) नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै

3. रैदास के इन पदों का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

ধন্যবাদ!